संस्कृतरहस्य

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

संस्कृतरहस्य

संस्कृत संसार की सभी भाषाओं की जननी है। अतः चारों वेद–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की भाषा वैदिक संस्कृत है। पाणिनि के अनुसार संस्कृत में 63/64 वर्ण हैं जबकि हिन्दी में 44 वर्ण हैं। जिसका उद्भव अपभ्रंश भाषा से हुआ है। वेदानुसार सृष्टिकाल 4,32,00,00,000 (चार अरब बत्तीस करोड़) वर्ष का होता है। अतः आज सृष्टि संवत 1,96,08,53,122 वर्ष चल रहा है। गिन्नीज़ बुक्स ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स के अनुसार वेद संसार के पुस्तकालय में प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम ग्रंथ है। जैसे हिन्दी आज भारत की राष्ट्रभाषा है इसी प्रकार मुसलमानों के आगमन से पूर्व संस्कृत भारत की राष्ट्रभाषा थी। इसी कारण हमारे मुख्य ग्रंथ संस्कृत भाषा में है।

संस्कृत में संसार की सभी भाषाओं से अधिक शब्द पाये जाते हैं। वर्तमान में संस्कृत के शब्दकोष में 102 अरब, 78 करोड़ 50 लाख शब्द हैं जब कि हिन्दी शब्दकोष में लगभग 5 लाख और अंग्रेज़ी में लगभग 2 लाख शब्द पाये जाते हैं। जैसे संस्कृत में हाथी के लिये 100 से भी अधिक शब्द हैं।

नासा के अनुसार संस्कृत संसार में बोलने वाली भाषाओं में से सबसे स्पष्ट भाषा है। नासा के पास संस्कृत में ताड़पत्रों पर लिखी हुई 6000 पांडुलिपियाँ हैं जिन पर शोध चल रहा है। जर्मन के 14 विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है। अतः जर्मनी में इसकी बड़ी माँग है। नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार जब वे अंतरिक्ष यात्रियों के संदेश भेजते थे तो उनके वाक्य उलट हो जाते थे। अतः संदेश का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने कई भाषाओं का प्रयोग किया परन्तु सफलता नहीं मिली। अंत में संस्कृत में संदेश भेजा और उन्हें सफलता प्राप्त हुई। क्योंकि संस्कृत में वाक्य उलटे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलता। नासा के वैज्ञानिकों द्वारा बनाए जा रहे छेवीं व सातवीं संतति के लिये सुपर कम्प्यूटर संस्कृत भाषा पर आधारित होंगे जोकि 2034 तक बनकर तैयार हो जायेंगे।

यहाँ तक कि लन्दन और आयरलैंड के कई स्कूलों में संस्कृत को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। संसार के कम से कम एक विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम संस्कृत में पढ़ाये जाते हैं।

भारत में कर्नाटक के मुत्तुर ग्राम के लोग आज भी केवल संस्कृत बोलते हैं। संस्कृत भाषा का प्रथम समाचार पत्र ''सुधर्मा'' 1970 ई. में छपना आरम्भ हुआ था। परन्तु आज भी इसका ऑन लाइन संस्करण उपलब्ध है। फोबर्स पत्रिका ने जुलाई 1987 ई. में संस्कृत को कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा स्वीकार किया था। संस्कृत संसार की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसके बोलने में जीभ की सभी मांसपेशियों का प्रयोग होता है। अतः अमेरिका हिन्दू विश्वविद्यालय के अनुसार संस्कृत बोलने वाला व्यक्ति उच्चरक्तचाप, मधुमेह, कॉलोस्ट्रोल आदि रोगों से मुक्त हो जाएगा।

अंग्रेज़ी भाषा को भारत में नियमित पढ़ाई के लिए राजा राममोहनराय ने सरकार पर दबाव डाला। अंग्रेज़ी सरकार अपने राज्य को दृढ़ करने के लिए ऐसा करने की इच्छुक थी, किन्तु जनता के विरोध से डरती भी थी। जब उसे एक बड़े नेता का सहारा मिल गया, तब उसकी चिन्ता मिटी और उसका साहस बड़ा। राजा राममोहन राय से प्रोत्साहन पाकर अंग्रेज़ी सरकार ने संस्कृत के स्थान में अंग्रेज़ी को प्रमुखता दी। मैकाले ने, प्रसन्न होकर, अपने पिता को लिखा था कि आज मैंने ऐसा कार्य किया है जिससे अंग्रेज़ी राज्य की जड़ें भारत में सदा के लिए जम जायेंगी। मैंने भारतीयों की जाति, बदलने का उपाय किया हैं अब आगे को जो भारतीय होंगे, उनकी चमड़ी अवश्य काली रहेगी, किन्तु मस्तिष्क तथा मन अंग्रेज़ी हो जायेगा।

जन्म से लेकर अन्त्येष्टि तक सब कार्य संस्कृत में होते हैं। प्रायः सभी भारतीय पूजा पाठ संस्कृत मन्त्रों या श्लोकों के द्वारा करते हैं। बौद्धों तथा जैनों ने आरम्भ में पाली तथा प्राकृत का आश्रय लिया, किन्तु उन्हें शीघ्र ही संस्कृत भाषा की शक्ति का ज्ञान हो गया। उन्हें पूर्ण निश्चय हो गया कि यदि उन्हें अपने विचार भारत तथ उसके उपनिवेशों में फैलाने अभीष्ट हैं, तो उन्हें संस्कृत भाषा की शरण लेनी होगी। तदनुसार उन्होंने संस्कृत का सहारा

लिया। फलस्वरूप महायानी बौद्धों का समस्त साहित्य संस्कृत में है। हीनयानी बौद्धों के सर्वास्तिवादी सम्प्रदाय ने भी अपने विचार प्रसार के लिए संस्कृत का सहारा लिया। जैनों की श्वेताम्बर-दिगम्बर दोनों प्रधान शाखाओं का संस्कृत में साहित्य अत्यन्त विशाल है।

आज भी यदि किसी विद्वान् को समूचे भारत में अपने विचारों का प्रचार करने की इच्छा होती है तो उसे अगत्या संस्कृत का अवलम्बन करना पड़ता है। भाषा तो विचार प्रकट करने का एक उपकरण है। मुर्दे को विचार प्रसार का साधन कैसे बनाया जा सकता है? और यह आज भी विचार प्रसार का एक उत्कृष्ट साधन बनी हुई है, अतः इसे मृतभाषा कहना न्याययुक्त नहीं है। आज भी इस भाषा के बोलने वालों की संख्या हज़ारों है। ये लोग परस्पर संस्कृत बोलते हैं, पत्रव्यवहार संस्कृत में करते हैं। अतः यह भाषा मृत कैसे?

इस सम्बन्ध में हमारा कट्टर विरोधी मुग्धानल लिखता है—

जैसे ईस्वीय संवत से शताब्दियों पूर्व संस्कृत बोली जाती थी, वैसे आज भी सहस्रों विद्वान् ब्राह्मण अपनी भाषा की भाँति इसे बोलते हैं। साहित्यिक प्रयोजनों (कार्यों) के लिए भी इसका प्रयोग बंद नहीं हुआ। आज भी संस्कृत) भाषा में अनेक ग्रंथ रचे जाते हैं और सामयिक पत्र प्रकाशित होते हैं।

संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ 8

संस्कृत मृत नहीं है, जीवित है। यह विशेष जानने की बात है कि योरूप की किसी भी प्राचीन भाषा में आज कोई भी नयी रचना नहीं रची जा रही, इसके विपरीत संस्कृत साहित्य में नित्य नूतन कृतियाँ की जा रही हैं। अतः इसे मृतक कहना घोर अन्याय है। केवल भाष्य, टीका टिप्पणी आदि ही नहीं, प्रत्युत नई रचनायें—काव्य, नाटक, दर्शन आदि विषयों के अनेक ग्रन्थ रचे जा रहे हैं। पाश्चात्य दर्शन एवं भौतिक विज्ञान के सम्बन्ध में भी संस्कृत भाषा में रचना हो रही है। आप तो बहुज्ञ हैं। आप ने बाली द्वीप का नाम सुना होगा। यह इंडोनेशिया द्वीप समूह के अन्तर्गत है। उनकी भी मातृभाषा संस्कृत है। अतः इस मातृभाषा को मृत कहना घोर अन्याय नहीं तो क्या है?

बात बहुत सीधी है कि संस्कृत भाषा सादा व्यवहार और ऊँचे विचारके सिद्धान्त की पोषक है । संस्कृत पढ़ने से अर्थ की सिद्धि भी होती है । देखिये यह तो बताया ही जा चुका है कि संस्कृत वाले अर्थाभाव के कारण आत्मघात करते नहीं सुने गये । इसलिए संस्कृत भाषा को अपनाने से अर्थ में क्षति पहुँचेगी, यह बात तो बनती दीखती नहीं । अर्थ की सिद्धि की बात लीजिए । संस्कृत पढ़कर अध्यापक, उपदेशक बनने वाले को अर्थ के साथ मान-प्रतिष्ठा भी प्रचुर मिलती है । इसके अतिरिक्त संस्कृत के ग्रन्थों के अनुवाद, उनके आधार से नये ग्रन्थों का निर्माण करके प्रचुर मात्रा में अर्थप्राप्ति की सम्भावना है । सरकार के पुरातत्त्व विभाग में संस्कृत वालों की बहुत पूछ है ।

संस्कृत साहित्य में बहुत यथार्थ गुण है–

संस्कृत साहित्य का इतना विस्तार है कि लैटिन तथा ग्रीक दोनों भाषाओं का साहित्य यदि एकस्थ कर लिया जाये तो वह संस्कृत के उपलभ्यमान वाङ्मय के सामने नगण्य प्रतीत होता है । संस्कृत साहित्य का मूल वेद है । वेद के पदपाठ, शाखायें तथा पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थ आते हैं, उसके पश्चात् आरण्यकों एवं उपनिषदों का नाम लिया जाता है । उसके साथ ही श्रौतसूत्र, गृहसूत्र, धर्मसूत्र शिक्षा, व्याकरण निरुक्त, छन्द शास्त्र, ज्योतिष दर्शनों का भी ध्यान रख लेना चाहिए । इतिहास, पुराण, उपपुराण, काव्य, नाटक, शिल्पशास्त्र, तन्त्र आदि का भी सन्निवेश है ।

दर्शन तथा अध्यात्म तो है ही वास्तव में हमारी थाती । किन्तु लौकिक व्यवहारोपयोगी ज्ञान-विज्ञान में हमारे पूर्वजों ने पर्याप्त रचना कार्य किया था । मुग्धानल के शब्दों में–

वैज्ञानिक साहित्य की विविध शाखाओं में, स्वर-विज्ञान, व्याकरण-शास्त्र, गणित (अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, क्षेत्रमिति आदि) ज्योतिष, औषध विज्ञान तथा धर्मविज्ञान (कानून) में भी हिन्दुओं ने महत्त्वपूर्ण योग्यता प्राप्त की थी । इन में से कई विषयों में तो इन की खोजें (अनुसंधान) ग्रीकों से कहीं बढ़-चढ़ कर थीं ।

संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ 10

अन्तिम वैयाकरण महर्षि पाणिनि के सम्बन्ध में गोल्डस्टकर ने लिखा है कि पाणिनि जैसा विद्वान् भूतल पर नहीं हुआ। ज्योतिष शास्त्र के विषय में कहना चाहिए कि भारतीय ही इसके आविष्कारक हैं। अंकगणित योरुप ने अरबों से सीखा। अरबी में इसका नाम अल् हिन्दसा है अर्थात् भारत से प्राप्त ज्ञान। अंकगणित का आधार अंक है। एक से नौ तक तथा शून्य यह संसार को भारत की बहुमूल्य देन है। शून्य का महत्त्व कौन पढ़ा लिखा नहीं जानता। दशमलव भी संसार को हमने सिखाया। नक्षत्रों, राशियों, ग्रहों आदि का बोध भी हम ही से संसार ने प्राप्त किया। मुग्धानल इस विषय में कहता है–

विज्ञान में भी योरुप भारत का अत्यधिक ऋणी रहा है। सब से प्रथम यह बहुत बड़ा सत्य है कि भारतीयों ने ही गणना के उपयोगी अंकों का जो अब समस्त संसार में प्रचलित हैं, आविष्कार किया। इस की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती कि उन अंकों पर आधारित दशमलव ने गणित विद्या तथा सभ्यता की प्रगति को कितना प्रभावित किया है। ईसा की आठवीं तथा नवीं शताब्दियों में भारतीय विद्वान् अंकगणित तथा बीजगणित में अरबों के गुरु बने, और उनके द्वारा पश्चिम की सभी जातियों के आचार्य हुये।

संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ 424

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अमृतसर में व्याख्यान देते हुए धनुर्वेद नामक ग्रन्थ के दो एक पन्ने दिखाकर कहा–

यदि कोई सज्जन 50000 रुपये व्यय करने को उद्यत हो जाये, तो मैं अपने निरीक्षण में वायुयान बनाकर उसे आकाश की सैर करा सकता हूँ।

महाभारत और रामायण के अध्ययन से वायुयानों के होने का ज्ञान तो होता ही है। उसके साथ ऐसे-ऐसे शास्त्रों का वर्णन है कि मनुष्य उन का वर्णन पढ़ सुनकर अवाक रह जाता है। उनमें से एक का नाम ब्रह्मास्त्र है जिसके विषय में लिखा है कि उसका प्रयोग सिखाते हुए गुरु शिष्य से प्रतिज्ञा लेता था कि वह इसका प्रयोग न करेगा। क्योंकि उसके प्रयोग करने से भूमि पर जीव-अजीव सभी ध्वंस हो जा सकते थे। इस वर्णन से प्रतीत होता है कि आज के अणुबम तथा उद्जनवम उसके सामने नगण्य हैं, किन्तु एक

गौरवपूर्ण बात भी है। आर्य जाति मानव का मान बहुत मानती थी। जीव के जीवन को बहुमूल्य मानती थी, अतः हमारी जाति के आचार्य इस विज्ञान का ज्ञान देते हुए राक्षसों के लिए बिभीषिका तो अवश्य प्रस्तुत रखते थे, किन्तु नरसंहार, प्राणिविनाश के दुष्परिणाम की वारणा भी अवश्य देते थे। इसीलिये हमारा विज्ञान आज के विज्ञान से उत्कृष्ट था।

आज का विज्ञान दो अरब सौर मण्डल बतलाता है, किन्तु वेद ने **सप्तदिशों नाना सूर्याः** (ऋ. 9.114.3) (इन सात दिशाओं में नाना असंख्य सूर्य हैं) कहा है। अर्थात् सृष्टि में सौर मण्डलों की गिनती पूरी करने के लिये मनुष्य को अभी बहुत कुछ करना है।

सूर्य आदि में प्राणी है अथवा नहीं है, इस विषय में पाश्चात्य वैज्ञानिकों में घोर मतभेद चल रहा है किन्तु हमारे पूर्वज इनको (वसु बसने का स्थान) नाम देकर निश्चित सिद्धान्त स्थापित कर गये हैं। गणित की चर्चा आप से तनिक सी की है। उस विषय में थोड़ा-सा और कथन करने की इच्छा हो गई है। आज की सुसभ्य जातियों की गणना के अंक को देखिये और हमारे पूर्वजों की गणना सीमा को भी देखिये। योरुप में हज़ार से आगे कठिनता पड़ी, आज योरुप में एक लाख के लिए एक शब्द नहीं, दस लाख के लिए मिलियन है। इसके विपरीत भारत गणना शास्त्र में करोड़, अरब, खरब, नील, पद्म आदि परार्ध तक का विधान है। दुःख की बात हे कि हमारे शासक अरब न कहकर सौ करोड़ कहते हैं। उसका कारण यह कि उनकी शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य पद्धति से हुई है। घर का उनको कोई ज्ञान नहीं है। इस अज्ञानजन्य दुराग्रह के कारण वे अंग्रेज़ी 1, 2, 3, 4 आदि लिखने पर आग्रह करते हैं फिर ये देशभक्त भी कहलाते हैं। मनुस्मृति जब जर्मनी में पहुँची तब वहाँ के विद्वानों ने इसका तथा जैमिनि के पूर्वमीमांसा दर्शन का अध्ययन करके कहा—

हन्त! यदि ये ग्रन्थ हमें दो सौ वर्ष पूर्व प्राप्त हुये होते तो हमें जो कानून के सम्बन्ध में परिश्रम करना पड़ा है, वह न करना पड़ता।

भास, कालिदास तथा भवभूति की टक्कर का कवि संसार के साहित्य

में कहाँ है? भाषा को मधुर बनाने के साधन अलंकार शास्त्र का जैसा परिष्कार भारत में हुआ है उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना का मार्मिक विवेचन जैसा यहाँ के आलंकारिकों ने किया है, अन्य किसी देश के विद्वान् वैसा नहीं कर पाये। उसके साथ ही रीति, गुण, दोषों एवं अलंकारों का सूक्ष्मेक्षिका से विचार सचमुच गीर्वाण वाणी का अलंकार है।

किसी भाषा के उत्कर्षापकर्ष का मापदण्ड उस भाषा की अक्षरमालिका के क्रमविन्यास तथा ध्वनियों के यथार्थ प्रतिनिधित्व पर निर्भर करता है। संस्कृत भाषा इस विषय में सब भाषाओं से श्रेष्ठ है। चीनी आदि तथाकथित मंगोल वर्ग की भाषाओं की लिपि चित्रमय है। जापान वालों ने अब लिपि बदल ली है। किन्तु वह भी दूषित ही है। क्योंकि उन्होंने इस विषय में पाश्चात्यों का अनुकरण किया है। जर्मन, रूसी तथा यवन भाषाओं को छोड़कर योरुप की सब भाषायें रोमन लिपि में लिखी जाती हैं। इस लिपि का क्रम अत्यन्त अवैज्ञानिक है। एक-एक अक्षर कई-कई ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करता है। जिससे पाठक निश्चय नहीं कर पाता कि वहाँ कौन सा अक्षर किस ध्वनि का द्योतन करता है। देखिये– अंग्रेज़ी में But में u की ध्वनि 'अ' है। Put में u की ध्वनि 'उ' की है और Busy में न की ध्वनि 'इ' की है। Concise English Dictionary के सम्पादक को यह दोष स्वीकार करना पड़ा।

> **Our alphabet is, therefore very far from being a perfect alphabet, which would have a distinct letter for each sound, and would always represent the same sound by the same letter. *key to Pronounciation).**

अतः हमारी वर्णमाला इस विषय में पूर्ण वर्णमाला की अपेक्षा अत्यन्त हीन है जिस में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक पृथक अक्षर होता है और जो सदा उसी ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता हो। जर्मन, यवन तथा रूसी भाषाओं का

रूप भिन्न है किन्तु क्रम यही है। अंग्रेज़ी कोशकार के मतानुसार जो दोष अंग्रेज़ी वर्णमाला में है, यह इनमें भी है।

इसके विपरीत संस्कृत भाषा का वर्ण एक एक ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है अर्थात् प्रत्येक ध्वनि के लिए पृथक्-पृथक् वर्ण नियत हैं और वे सदा उसी ध्वनि का ही द्योतन करते हैं। इसका एक सुपरिणाम है कि संस्कृत तथा उसकी वर्णमाला को अपनाने वाली सब भारतीय भाषायें, बरमी, सिंहली एवं तिब्बती भाषाओं में Spelling तथा Pronounciation अक्षरयोजन के रटने तथा उच्चारण के घोटने का घोटाला नहीं है। अंग्रेज़ी भाषा का एक शब्द है Psychology, अक्षर योजना के अनुसार इसका उच्चारण बनता है। प्साईचोलोगाई किन्तु है साईकॉलोजी। अरबी तथा योरुप की भाषाओं में स्वर और व्यंजन मिला के रखे हैं। किन्तु संस्कृत में स्वर व्यंजन पृथक्-पृथक् रखे गये हैं और स्वरों को प्राथमिकता दी गई है।

उन भाषाओं में वर्णों का कोई क्रम नहीं है। संस्कृत में इस का बहुत वैज्ञानिक विचार किया है। छाती से ऊपर उठकर जब वायु मुख में आती है तो सर्वप्रथम उसका सम्पर्क कष्ठ से होता है। पुनः तालु से, पश्चात् मूर्धा से, तदनन्तर दन्त से और सबके पश्चात् ओष्ठ से। देखिये व्यंजनों में पहले कवर्ग है उसका स्थान कंठ है। फिर चवर्ग आता है उसका स्थान तालु है। फिर टवर्ग मूर्धस्थानीय है। फिर तवर्ग दन्तस्थानीय है। अन्त में पवर्ग ओष्ठ स्थानिक है। स्वरों में भी इस क्रम को दृष्टि से रखा गया है। तात्पर्य यह कि संस्कृत भाषा की वर्णमाला सब भाँति से वैज्ञानिक है।

अतः ऊपरलिखित विवेचन-विश्लेषण से यह निष्कर्ष एवं निचोड़ निकलता है कि संस्कृत एक महान् एवं सम्पूर्ण भाषा है। परन्तु आजकल यह भाषा बोलचाल की भाषा न रहकर किताबी भाषा बन कर रह गई है। अतः इसे जीवित रखने के लिए और रोचक बनाने के लिये यह अत्यावश्यक है कि जब भी हम संस्कृत भाषा में बोलें, साथ ही साथ सरल हिन्दी में भी उसका अनुवाद अवश्य करें ताकि साधारण व्यक्ति भी इसे समझ सके।

हम देखते हैं कि बाइबल जोकि हब्रु और यूनानी भाषा में लिखी गई

थी। परन्तु आज इसका अनुवाद लगभग विश्व की 2000 भाषाओं में हो चुका है क्योंकि जहाँ भी इस मत के अनुयायी जाकर प्रवचन करते हैं वे उसी भाषा में करते हैं जो वहाँ के साधारण लोग की भाषा हो। इसी प्रकार मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ क़ुरान अरबी में लिखा गया परन्तु जब भी इसके अनुयायी इस पर प्रवचन करते हैं तो वे उर्दू में अनुवाद भी करते हैं। परन्तु यह दारुण दुर्भाग्य का विषय है कि आर्यसमाजी भाई जब यज्ञ करते हैं तो वे साधारणतः संस्कृत में ही मंत्रों को बोलते हैं।

अतः मैं सब आर्यसमाजों के विद्वानों एवं अन्य विद्वानों से सविनय निवेदन करता हूँ कि वे संस्कृत में वेदमंत्रों को अवश्य बोलें परन्तु इसके साथ-साथ उनका सरल हिन्दी में अनुवाद अवश्य करें ताकि साधारण व्यक्ति भी इन मंत्रों के अर्थों को समझ सके। इसके दो लाभ होंगे एक यज्ञ में लोग अधिक आयेंगे और दूसरे संस्कृत भाषा का विकास भी होगा और इसका भविष्य भी उज्ज्वल होगा।

वैदिकप्रार्थना

जैसे मैं अग्रलिखित प्रतिदिन वैदिकप्रार्थना अर्थसहित करता हूँ जिससे वेदों, उपनिषदों आदि ग्रंथों के अत्यंत महत्त्वपूर्ण मंत्र एवं श्लोक हैं जो कि साधारणतः विभिन्न शुभ अवसरों पर बोले जाते हैं। हाँ यदि समयाभाव हो तो कम मंत्र बोलिये परन्तु कृपया अर्थसहित बोलिए। ज़रा उदाहरण देखिए–

1. ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

–ऋग्वेद 3.62.10, यजुर्वेद 3.35, 22.9, 30.2, 36.3, सामवेद 1462

1. ओ३म्–रक्षक, 2. भूः–प्राण प्रिय (सत्), 3. भुवः–दुःख नाशक (चित्), 4. स्व–आनंददायक (आनंद), 5. तत्–उस प्रभु को, 6. सवितः–सकल जगत् के उत्पादक, 7. वरेण्यं–ग्रहण करने योग्य, 8. भर्ग–शुद्ध तेज का, 9. देवस्य–प्रभु के, 10. धीमहि–धारण करें, 11. धियः–बुद्धियों को या कर्मों को, 12.यो–जो प्रभु, 13. नः–हमारी, 14. प्रचोदयात्–सन्मार्ग पर ला दें।

पद्यानुवाद–

तुने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू ।
तुमसे ही पाते प्राण हम दुःखियों के कष्ट हरता है तू ।।
तेरा महान् तेज है छाया हुआ सभी स्थान ।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में तू हो रहा है विद्यमान ।।
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया ।
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला ।।

गद्यानुवाद –

हे प्रभु ! आप सर्वरक्षक, प्राणधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक और सतचित् आनंद स्वरूप है ।। आपही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञान दाता एवं कर्मफल दाता हैं । हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप वरणीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप का हृदय मन्दिर में ध्यान धरते हैं । आप हमारी बुद्धियों को कृपया श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए ।

2. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्नऽआसुव । –यजुर्वेद 30.3, ऋग्वेद 5.82.5

हे प्रभो ! तू सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है ।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है ।।
सारे दुर्गुण, दुर्व्यसनों से हम को प्रभु ! बचा लीजिए ।
मंगलमय ! गुण-कर्म पदार्थ, प्रेमसिन्धु हमको दीजिए ।।

हे प्रभु ! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारी, गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइये ।

3. ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् । यजु. 36.24

हो आँखों की आँख पिता जी, देवों के महादेव अनादि ।
महिमा देखें सौ वर्ष तक, सुनें कीर्तन सौ वर्ष तक ।

सुख से जीवें सौ वर्ष तक, ध्यावें ईश्वर सौ वर्ष तक।
प्रेम लीन हों सौ वर्ष तक, स्वाधीन होवें सौ वर्ष तक।
सौ वर्ष से ज़्यादा जीवें, ओम् नाम रस अमृत पीवें।

जो ब्रह्म सब का द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों एवं अपने भक्तों का परम हितकारक है तथा सृष्टि के पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से वर्तमान रहता और सब जगत् का कर्त्ता, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् है। उसी ब्रह्म को हम लोग सौ वर्ष पर्यन्त निरन्तर देखें और उसी की कृपा से सौ वर्ष तक प्राणों को धारण करें उसी की स्तुति-प्रार्थना के लिये जीवें, उसी परमदेव के गुणों में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास वाले होकर हम उसके गुणों को सौ वर्ष पर्यन्त देव के गुणों में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास वाले होकर हम उसके गुणों को सौ वर्ष पर्यन्त सुनें तथा उसी ब्रह्म व उसके गुणों तथा वेदज्ञान का अन्यों को नित्य उपदेश करें और उसकी कृपा से उसी परमेश्वर की आज्ञा पालन और कृपा से सौ वर्षों के उपरान्त भी हम लोग देखें, जीवें सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें। इसलिए प्रेम में अत्यन्त मग्न होके अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़कर इन मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा करते रहें।

4. ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।

यजुर्वेद 19.9

हे तेजवन्त भगवन्! मुझ में तेज भर दो।
ब्रह्माण्ड वीर्य! मुझको भी वीर्यवान् कर दो।।
बल-वीर्य के भण्डारी! मुझको बली बना दो।
हे ओज के अधीश्वर! निज ओज से सज़ा दो।।
पुरुषत्व रोष पावन, सहने की शक्ति दे दो।
अपने सभी गुणों से, परिपूर्ण नाथ कर दो।।

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! आप तेजस्वरूप हैं, मुझे भी तेजस्वी बनाइये। आप वीर्यवान् हैं, मुझे भी वीर्यवान् बनावें, आप बलशाली हैं मुझे भी बल प्रदान कीजिये। आप ओज-स्वरूप हैं, मुझे भी ओजस्वी बनाइये। आप दुष्टों पर क्रोध करने वाले हो, मुझे भी ऐसा मन्यु प्रदान कीजिये। आप में महान् सहनशीलता है। मुझे भी सहिष्णुता का गुण प्राप्त कराइये।

5. ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। ऋग्वेद 1.1.1

विश्व-विधाता के चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाऊँ।
जिसने यह ब्रह्माण्ड संवारा, उसकी गाथा गाऊँ।।

मैं उस प्रभु की जो कि संसार में अनादि यज्ञ-प्रकाशक, सब ऋतुरचक, महादानी रत्ननिर्माता सब अग्रणीय नेता की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता हूँ। वही मेरा एक मात्र उपास्य देव है।

6. ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह। ऋ. 7-41-5

अमृतमयी सुखद वेला में, शुभ कर्मों का ध्यान करें।
जीवन में ऐश्वर्य भरो प्रभु, अमृतरस का पान करें।।
हम सब हों सौभाग्यवान् नित, धरते रहें तुम्हारा ध्यान।
सब जग के उपकारी होवें, ऐसी कृपा करो भगवान्।।

हे प्रभो! जिससे उस आपकी सब सज्जन निश्चय करके प्रशंसा करते हैं, सो आप, हे ऐश्वर्यप्रद! इस संसार और हमारे गृहाश्रम में अग्रगामी और आगे-आगे सत्य कर्मों में बढ़ाने हारे हूजिये और जिससे सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही हमारे पूजनीय देव होइये, उसी हेतु से हम विद्वान् लोग सकलैश्वर्यसम्पन्न होके, सब संसार के उपकार में तन, मन, धन से प्रवृत्त होवें।

7. ओ३म् असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽअमृतं गमय। बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3-28

मिथ्या मति मिटाकर, तुम सत्य में लगा दो ।
अज्ञान-तम हटाकर, तुम ज्योति जगमगा दो ।।
जीवन-मरण का बन्धन, काटने की साधना दो ।
अमृत-सुधा पिलाकर, मुझको अमर बना दो ।।

हे प्रभो ! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

8. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

पाण्डव गीता श्लोक नं. 28

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो ।
तुम्हीं हो विद्या, द्रविण तुम्हीं हो, सब देवों के देव तुम्हीं हो ।।

हे प्रभो ! आप ही मेरे माता-पिता हो और आप ही मेरे बंधु-बांधव हो, और सखा भी आप ही हो । आप ही मेरी विद्या और धन हो । आप मेरे सब कुछ हो ।

9. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।
सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान् ।
सब पर कृपा करो भगवान्, सब का सब विधि हो कल्याण ।।
हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुःखारी,
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी ।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों,
दुःखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणाधारी ।।

हे प्रभो ! सब सुखी हों, सब स्वस्थ और निरोग हों, सबका कल्याण हो, कोई भी प्राणी दुःखी न हो, ऐसी कृपा कीजिए ।

10. ओ३म् द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः । वनस्पत्यः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।। यजुर्वेद 36.17

शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ।
जल में, थल में और गगन में, अंतरिक्ष में, अग्नि, पवन में ।
औषधि, वनस्पति, वन, उपवन में, सकल विश्व के जड़ चेतन में ।
शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ।
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में ।
वैश्य जनों के होवे धन में और शूद्र के हो अर्चन में ।
शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ।
शांति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर-ग्राम और भवन में ।
जीवमात्र के तन में और जगती के कणकण में ।
शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, शांति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में ।

हे प्रभो ! प्रकाशमान सूर्यादि लोक सुखदायक हों, दोनों लोकों के मध्य में स्थित आकाशादि सुखकारी हों, भूलोकादि कल्याणकारी हों, जल व प्राण शान्ति देने वाले हों, सब अन्न व औषधि कल्याण करने वाली हों, वनस्पति सुख देने वाले हों, सब दिव्य जीव वा दिव्य पदार्थ सुखकारी हों, ईश्वर, वेदज्ञान व विद्वान् लोग सुखदायक हों और इनके अतिरिक्त और सब ही हमें सुख शान्ति देने वाले हों । हे शान्ति ! संसार में सर्वत्र शांति हो ।

ओ३म् शांति ! शांति !! शांति !!!

लेखक
दिनांक : 14.4.2021
धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला - 134112 (हरियाणा)
फोन : 0172.2567845
मोबाइल : 9356301618
Website www.dpkapoorbooks.co.in